गोरखपुर का जलवा! नगर निगम ने जीता ग्लोबल वाटर टेक अवार्ड 2026

विषय सूची (Table of Contents):

>> इंटीग्रेटेड अर्बन वाटर मैनेजमेंट प्रोजेक्ट के तहत मिला प्रतिष्ठित सम्मान...
>> महापौर डॉ. मंगलेश कुमार श्रीवास्तव ने ग्रहण किया सम्मान...
>> आने वाली पीढ़ियों के लिए सतत विकास की थीम...
>> तकनीक और अर्बन फ्लड मैनेजमेंट सेल से जलभराव की समस्या का समाधान...
>> 110 ऑटोमेटिक वाटर लेवल सेंसर और रियल टाइम मॉनिटरिंग...
>> डिजिटल ट्विन और वर्षा पूर्वानुमान प्रणाली का उपयोग...
>> 21 पंपिंग स्टेशनों का स्काडा (SCADA) आधारित ऑटोमेशन सिस्टम...
>> 25 में से 21 प्रमुख पंपिंग स्टेशनों का ऑटोमेशन...
>> स्वचालित संचालन और बेहतर मॉनिटरिंग...
>> वेटलैंड और नैनोबबल तकनीक प्रकृति आधारित जल संरक्षण के उपाय...
>> तकियाघाट पर रॉक फिल्टर और वेटलैंड मॉडल...
>> मोती पोखरा में नैनोबबल और अल्ट्रासाउंड तकनीक...
>> 4000 से अधिक रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम और तालाबों का पुनरुद्धार...
>> 4,000 रेन वाटर हार्वेस्टिंग और रीचार्ज बोरवेल...
>> 100 से अधिक जल निकायों का कायाकल्प...
>> सफाई व्यवस्था का डिजिटलीकरण 4600 सफाईकर्मी डिजिटल नेटवर्क से जुड़े...
>> सफाई मित्र कनेक्ट और नमस्ते कार्यक्रम...
>> पारदर्शिता और फील्ड मॉनिटरिंग में सुधार...
>> ग्लोबल समिट में सराहा गया गोरखपुर का स्मार्ट और सतत जल प्रबंधन मॉडल...
>> पैनल चर्चा में नगर निगम की प्रस्तुति...
>> अन्य उपयोगी जानकारियाँ...
>> निष्कर्ष (Conclusion)...
>> आपके सवाल, हमारे जवाब...

Gorakhpur Municipal Corporation Wins Global Water Tech Award 2026:उत्तर प्रदेश के गोरखपुर नगर निगम ने जल प्रबंधन और शहरी बाढ़ नियंत्रण के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व मिसाल कायम की है। नगर निगम गोरखपुर को प्रतिष्ठितिजीईईएफ ग्लोबल वाटर टेक अवार्ड 2026 (GEEF Global Water Tech Award 2026)से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रदान किया गया, जिसने शहर के विकास मॉडल को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई है।

इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर विस्तृतlatest updateसाझा करते हुए नगर निगम प्रशासन ने बताया कि शहर के आधुनिक और प्रकृति-आधारित जल प्रबंधन मॉडल की देशभर के विशेषज्ञों द्वारा सराहना की जा रही है। अगर आप देश में जल संरक्षण की अन्य पहलों

के बारे में जानना चाहते हैं, तोभारत में जल सुरक्षा, जल संरक्षण और प्रबंधन को नई दिशासे जुड़े लेख को भी पढ़ सकते हैं।

इंटीग्रेटेड अर्बन वाटर मैनेजमेंट प्रोजेक्ट के तहत मिला प्रति

गोरखपुर नगर निगम को यह प्रतिष्ठित सम्मान इंटीग्रेटेड अर्बन वाटर मैनेजमेंट प्रोजेक्ट ऑफ द ईयर 2026 श्रेणी में प्रदान किया गया है। यह अवार्ड नई दिल्ली में आयोजित ग्लोबल वाटर टेक समिट एंड अवार्ड 2026 के दौरान दिया गया।

महापौर डॉ. मंगलेश कुमार श्रीवास्तव ने ग्रहण किया सम्मान

शुक्रवार को आयोजित इस राष्ट्रीय शिखर सम्मेलन में गोरखपुर के महापौरडॉ. मंगलेश कुमार श्रीवास्तवने नगर निगम की ओर से यह अवार्ड ग्रहण किया। उनके साथ प्रतिनिधिमिडल में अपर नगर आयुक्त गौरव रंजन श्रीवास्तव और सहायक नगर आयुक्त अविनाश प्रताप सिंह भी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

आने वाली पीढ़ियों के लिए सतत विकास की थीम

इस प्रतिष्ठित सम्मेलन का मुख्य विषय आने वाली पीढ़ियों के लिए जल स्रोत से सतत विकास तक नवाचार को बढ़ावा देना तय किया गया था। इस मंच पर गोरखपुर के नवाचारों को प्रस्तुत किया गया, जिसे विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधियों ने सराहा।

तकनीक और अर्बन फ्लड मैनेजमेंट सेल से जलभराव की समस्या का समा

गोरखपुर में मानसून के समय होने वाले गंभीर जलभराव से निपटने के लिए आधुनिक तकनीक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाया गया है। नगर निगम ने इसके लिए एक समर्पितअर्बन फ्लड मैनेजमेंट सेल (UFMC)का गठन किया है।

110 ऑटोमेटिक वाटर लेवल सेंसर और रियल टाइम मॉनिटरिंग

शहर के जलस्तर पर 24 घंटे नजर रखने के लिए विभिन्न संवेदनशील स्थानों पर110 ऑटोमेटिक वाटर लेवल सेंसरस्थापित किए गए हैं। इन सेंसर्स के जरिए कंट्रोल रूम में रियल टाइम डेटा पहुंचता रहता है।

डिजिटल ट्विन और वर्षा पूर्वानुमान प्रणाली का उपयोग

नगर निगम ने ड्रेनेज नेटवर्क के लिए अत्याधुनिकडिजिटल ट्विन तकनीकलागू की है। साथ ही एडवांस्ड वर्षा पूर्वानुमान प्रणाली और स्वचालित पंपिंग सिस्टम के समन्वय से बारिश शुरू होने से पहले ही निकासी की रणनीति तैयार कर ली जाती है।

>> जलभराव अवधि में भारी गिरावट:इन तकनीकों के सफल क्रियान्वयन का असर 2025 के मानसून में स्पष्ट देखने को मिला।

>> रिकॉर्ड सुधार:पहले जहां बारिश के बाद जलभराव औसतन 12 घंटे तक रहता था, वही अब यह समय घटकरडेढ़ घंटे से भी कमरह गया है।

21 पंपिंग स्टेशनों का स्काडा (SCADA) आधारित ऑटोमेशन सिस्टम

जल निकासी को निर्बाध और मानवीय त्रुटियों से मुक्त बनाने के लिए नगर निगम ने अपने प्रमुख पंपिंग स्टेशनों को पूरी तरह स्वचालित कर दिया है।

25 में से 21 प्रमुख पंपिंग स्टेशनों का ऑटोमेशन

शहर के कुल 25 प्रमुख पंपिंग स्टेशनों में से21 पंपिंग स्टेशनों को स्काडा (Supervisory Control and Data Acquisition)आधारित ऑटोमेशन सिस्टम से जोड़ दिया गया है। इससे किसी भी स्थान से पंपों को चालू या बंद किया जा सकता है।

स्वचालित संचालन और बेहतर मॉनिटरिंग

स्काडा सिस्टम लागू होने से पंपिंग स्टेशनों की कार्यक्षमता कई गुना बढ़ गई है। सेंसर से जलस्तर का इनपुट मिलते ही ऑटोमैटिक पंप शुरू हो जाते हैं, जिससे मुख्य सड़कों और बस्तियों में पानी एकत्र नहीं हो पाता।

वेटलैंड और नैनोबबल तकनीक: प्रकृति आधारित जल संरक्षण के उपाय

गोरखपुर नगर निगम ने केवल आधुनिक मशीनों पर निर्भर रहने के बजाय प्रकृति-आधारित समाधानों (Nature-Based Solutions) को भी अपने मॉडल का प्रमुख हिस्सा बनाया है।

तकियाघाट पर रॉक फिल्टर और वेटलैंड मॉडल

तकियाघाट क्षेत्र में एक आधुनिकवेटलैंडविकसित किया गया है। यहाँ रॉक फिल्टर और स्थानीय वनस्पतियों की प्राकृतिक शोधन क्षमता की मदद से दूषित अपशिष्ट जल का प्रभावी उपचार किया जा रहा है।

मोती पोखरा में नैनोबबल और अल्ट्रासाउंड तकनीक

जल स्रोतों के जीर्णोद्धार के तहत मोती पोखरा मेंनैनोबबल और अल्ट्रासाउंड तकनीकका उपयोग किया जा रहा है। यह तकनीक पानी में ऑक्सीजन का स्तर बढ़ाकर उसकी गुणवत्ता में तेजी से सुधार करती है और जलीय जीवन को सुरक्षित रखती है।

4000 से अधिक रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम और तालाबों का पुनर

भूजल स्तर को रीचार्ज करने और वर्षा जल का संचयन करने के लिए नगर निगम गोरखपुर ने व्यापक अभियान चलाया है। जल स्रोतों के संरक्षण को प्राथमिकता सूची में शीर्ष पर रखा गया है।

4,000 रेन वाटर हार्वेस्टिंग और रीचार्ज बोरवेल

महापौर डॉ. मंगलेश कुमार श्रीवास्तव के अनुसार शहर के सरकारी व निजी परिसरों में4,000 से अधिक रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टमलगाए जा चुके हैं। इसके अतिरिक्त बारिश के पानी को भूमिगत जल में भेजने के लिए रीचार्ज पिट और बोरवेल रीचार्ज तकनीक अपनाई गई है।

100 से अधिक जल निकायों का कायाकल्प

शहर के पर्यावरण संतुलन को बनाए रखने के लिए100 से अधिक पुराने तालाबों एवं पोखरों का पुनरुद्धार (Rejuvenation)किया गया है। इससे न केवल ग्राउंडवाटर टेबल सुधरा है, बल्कि स्थानीय जैव विविधता को भी नया जीवन मिला है।

सफाई व्यवस्था का डिजिटलीकरण: 4600 सफाईकर्मी डिजिटल नेटवर्क स

जल प्रबंधन के साथ-साथ शहर की ठोस अपशिष्ट और नाला सफाई व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए मानव संसाधन का डिजिटलीकरण

कयिा गया हैं।

सफाई मत्रि कनेक्ट और नमस्ते कार्यक्रम

नगर नगिम द्वारा संचालति सफाई मत्रि कनेक्ट और केंद्र सरकार के नमस्ते कार्यक्रम के अंतर्गत 4,600 से अधकि स्वच्छता कर्मयिों को डजिटिल प्लेटफॉर्म से जोड़ा गया हैं।

पारदर्शति और फील्ड मॉनटिरगि में सुधार

डजिटिल प्रणाली से जुड़ने के कारण कर्मचारयिों की उपस्थति,ि फील्ड कार्यों का स्टेटस और नालों की सफाई की लाइव मॉनटिरगि संभव हो सकी हैं। इससे शहर का ड्रेनेज सस्टिम मानसून में अवरुद्ध नही होता।

ग्लोबल समटि में सराहा गया गोरखपुर का स्मार्ट और सतत जल प्रबं

ग्लोबल वाटर टेक समटि 2026 के दौरान आयोजति पैनल चर्चा में गोरखपुर के इंटीग्रेटेड मॉडल ने सभी वशिषज्ञों का ध्यान आकर्षति कयिा।

पैनल चर्चा में नगर नगिम की प्रस्तुति

महापौर ने स्मार्ट और सतत जल प्रबंधन : वास्तवकि प्रभाव देने वाली तकनीकों का वस्तिार वषियक सत्र में गोरखपुर के नवाचारों, कम लागत वाले समाधानों और जनभागीदारी की रूपरेखा प्रस्तुत की।

अन्य उपयोगी जानकारयिाँ

उत्तर प्रदेश में वभिन्नि क्षेत्रों में जारी वकिास कार्यों और परीक्षा परणिामों की जानकारी के लएि अभ्यर्थीयूपी बोर्ड रजिल्ट 2026का स्टेटस देख सकते हैं अथवा स्वास्थ्य क्षेत्र से संबंधति अधसिूचना के लएियूपी जीएनएम प्रवेश 2026: रजिल्ट जारी, यहाँ देखें कटऑफ और मेरटि लस्टि!लकि पर क्लकि कर पूरी डटिेल चेक कर सकते हैं।

निष्कर्ष (Conclusion)

गोरखपुर नगर निगम को मलिजीईईएफ ग्लोबल वाटर टेक अवार्ड 2026इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि सही तकनीक, प्रकृति-आधारित दृष्टिकोण और दृढ़ प्रशासनिक इच्छाशक्ति से किसी भी शहर की जटिल से जटिल समस्या को सुलझाया जा सकता है। गोरखपुर का यह एकीकृत जल प्रबंधन मॉडल आज देश के अन्य नगर निकायों के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण बन चुका है।

आपके सवाल, हमारे जवाब

गोरखपुर नगर निगम को नई दिल्ली में आयोजित सम्मेलन में जीईईएफ ग्लोबल वाटर टेक अवार्ड 2026 से सम्मानित किया गया है।

यह सम्मान इंटीग्रेटेड अर्बन वाटर मैनेजमेंट प्रोजेक्ट ऑफ द ईयर 2026 श्रेणी में दिया गया है।

गोरखपुर के महापौर डॉ. मंगलेश कुमार श्रीवास्तव ने अपर नगर आयुक्त और सहायक नगर आयुक्त की उपस्थिति में यह सम्मान प्राप्त किया।

UFMC का उद्देश्य बारिश के पूर्वानुमान, जलस्तर की रियल टाइम निगरानी और जल निकासी व्यवस्था को एकीकृत कर बाढ़ व जलभराव को रोकना है।

शहर भर में रियल टाइम डेटा और जलस्तर ट्रैक करने के लिए 110 ऑटोमेटिक वाटर लेवल सेंसर स्थापित किए गए हैं।

नगर निगम के कुल 25 प्रमुख पंपिंग स्टेशनों में से 21 को स्काडा ऑटोमेशन नेटवर्क से जोड़ा गया है।

जलभराव की औसत अवधि जो पहले लगभग 12 घंटे थी, वह नई तकनीकों के प्रयोग से घटकर 1.5 घंटे से भी कम रह गई।

तकियाघाट पर रॉक फिल्टर और स्थानीय वनस्पतियों की मदद से अपशिष्ट जल के प्राकृतिक उपचार हेतु वेटलैंड विकसित किया गया है।

मोती पोखरा में पानी की गुणवत्ता सुधारने और जल संरक्षण के लिए नैनोबबल और अल्ट्रासाउंड तकनीक का उपयोग किया जा रहा है।

शहर में 4,000 से अधिक रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम स्थापित किए गए हैं और 100 से अधिक तालाबों व पोखरों का कायाकल्प किया गया है।

सफाई मित्र कनेक्ट और नमस्ते योजना के तहत 4,600 से अधिक सफाई कर्मचारियों को डिजिटल नेटवर्क से जोड़ा गया है।

हाँ, रीचार्ज पिट, बोरवेल रीचार्ज और व्यापक हार्वेस्टिंग सिस्टम के माध्यम से भूजल स्तर तेजी से रीचार्ज और संरक्षित हो रहा है।